गौरीशंकर

1008

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ

(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

MOHAN PUBLICATIONS,

राष्ट्र भाषा साहित्य समिति

स्टाचू रोड त्रिवेन्द्रम-१

Standard IX Book No. 2

गौरीशंकर

२१९१

संपादक

श्री. पी. जे. जोसफ़

(हिन्दी लेक्चरर, मार ईवान्योस कालेज, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. पी. परमेश्वरन पिल्लै B. Sc. (Eng.)

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

विद्वान श्री. के. वी. कृष्णनकुट्टि B. A; साहित्यरत्न

(अध्यापक, राष्ट्रभाषा मंदिर, तिरुवनन्तपुरम)

★

1008

प्रकाशक

श्री. के. प्रभाकरन नायर

कावुविला हाउस,

जगति, तिरुवनन्तपुरम ।

दाम ६० नये पैसे

GOURI SANKAR

FIRST IMPRESSION. COPIES 1500

1957

PUBLISHER

SRI. K. PRABHAKARAN NAIR

KAVUVILA HOUSE

JAGATHY, TRIVANDRUM.

All rights reserved.]

[*Price 60 nP.*

संपादकीय

हमारे छात्र-जगत् में उपयोगी हिन्दी पुस्तकों के नितांत अभाव ने विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रगति को अवरुद्ध किया है। उस अभाव की सर्वांगीण पूर्ति का विनम्र प्रयास है, यह पुस्तकमाला। इसमें रचना की लोकप्रियता तथा अक्लिष्टता के लिए प्रचलित संस्कृत शब्दों का प्रयोग एवं केरल के छात्रमण्डल की प्रवृद्ध बौद्धिकता के अनुरूप वस्तु-व्यंजना—ये दोनों कार्य अध्यापनकला में अपने विपुल अनुभव के आधार पर हमारे निष्कर्ष हैं।

प्रबंध, नाटक, जीवनी, गल्प आदि विभिन्न रूपों के द्वारा विज्ञान, धर्म्म, कला, संस्कृति—सभी क्षेत्रों का संस्पर्श करके विद्यार्थियों में महत्वाकांक्षा जाग्रत कर, एक सांस्कृतिक चेतना फैलाने का प्रयास आप इन पन्नों पर देख सकेंगे। बौद्धिक विकासक्रम में छात्रों के विभिन्न स्तरों को ध्यान में रखकर उसी के अनुरूप सभी पुस्तकों की रचना की गयी है। यहाँ तक कि कठिन शब्दों की अर्थ-सूची तथा मुहावरों का प्रयोग भी क्रम क्रम से प्रस्तुत हैं। स्तर पर स्तर ये मृदुल श्रम-सीकर सागर से चिर सुंदर बन जाएँ।

* * * *

शीघ्रता के कारण यत्र-तत्र जो त्रुटियाँ हुई हैं उन्हें सहृदय पाठक गण क्षमा करें।

इस किताब के बारे में

अब तक गौरी शंकर की चोटी मनुष्य-शक्ति की हँसी उडाते हुए अपना माथा ऊँचा कर खडी रही। पर प्रयत्नशील मानव के पैरों तले वह उत्तुंग श्रृंग आ गया। आखिर मनुष्यशक्ति की जीत हुई। उस विजय के पीछे वेदना जनक तथा वीरतापूर्ण त्यागों की एक लंबी कहानी है। साथ साथ मनोरंजक मनगढंत कहानियाँ भी।

के. वी. कृष्णनकुट्टि.

गौरीशंकर

"अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा
हिमालयो नाम नगाधि राज्ञः"

किसने ये [1] पंक्तियाँ लिखी हैं? क्या आप जानते हैं! ये पंक्तियाँ विश्वमहाकवि कालीदास की हैं। उन्होंने "कुमारसंभवम्" नामक एक महाकाव्य लिखा है। यह काव्य संस्कृत में लिखा गया है। ये उसके प्रथम श्लोक की दो पंक्तियाँ हैं। अच्छा, इसका अर्थ सुनिये। "उत्तर दिशा में देवताओं की प्रीति का पात्र हिमालय नामक पर्वतराजा हैं।"

हिमालय की सुन्दरताओं और विशेषताओं के बारे में आप जानते हैं न? पहले उस नाम को ही लेंगे—हिमालय! हिम का अर्थ है बरफ़ और आलय का [2] मतलब है निवास स्थान। तो हिमालय से मतलब हिम का निवास स्थान है।

---

[1] पंक्ति = कविता का एक पद, Line

[2] मतलब = अर्थ

यह भारत की उत्तरी [1]सीमा पर है। आप को मालुम है कि हिम का रंग [2]धवल है। मीलों तक यह लंबा पडा है। इसकी [3]चोटियाँ आकाश को [4]छू रही हैं। जहाँ देखो वहाँ धवल वर्ण ही है। [5]चाँदी का बनाया हुआ जैसा। निर्मल [6]श्वेत वर्णवाला बरफ़ हर समय अन्तरीक्ष से गिर रहा है। इस प्रकार हिमालय पर हर समय बरफ की वर्षा होती है। सबेरे और शाम को सूरज की [7]सुनहरी रश्मियाँ इस पर पडती हैं। तब तो हिमालय [8]जगमगाने लगता है। मन में वह दृश्य ज़रा देखने की कोशिश कीजिए। हाँ, आप ज़रूर देख सकेंगे। छोटे छोटे पर्वतों और टीलों को आपने देखा होगा। शाम और सबेरे आपने उनको सूर्य किरणों से आभूषित भी देखा होगा। क्या, आप घण्डों तक उस सुन्दर दृश्य को देखते रहे ? यदि वे पर्वत पूर्ण रूप से सफेद वर्ण के होते तो कैसे

---

[1] सीमा = हद Limit

[2] धवल = सफेद

[3] चोटियाँ = गिरि शृंग

[4] छू = स्पर्शन करना

[5] चाँदी = रजत (Silver)

[6] श्वेत वर्ण = सफेद वर्ण

[7] सुनहरी = सुवर्ण

[8] जगमगाना = प्रकाशमान होना

दिखाई देते ? साफ धुला हुआ [1]खालिस चाँदी का [2]बर्तन तेज़ धूप में रखिए। तब वह कैसे चमकने लगता है ! छोटे बर्तन की इतनी शोभा और सुन्दरता ! तो एक चाँदी का पर्वत कितना सुन्दर होगा। हाँ ज़रूर ! यही हिमालय की भी सुन्दरता है। दिन के [3]धूप और रात की [4]चाँदनी में उसकी शोभा अवर्णनीय है। इस सुन्दर दृश्य को देखकर ही कालीदास जैसे महाकवियों ने काव्य लिखे थे। कवियों के हृदय में कविता भर देने की [5]असीम शक्ति इसको है।

कहा गया है कि हिमालय देवताओं का भी आलय है। हिन्दुओं के त्रिमूर्तियों के नाम सुने हैं न ? वे हैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर। ब्रह्म का अपना लोक है—ब्रह्मलोक। वैकुण्ठ विष्णु का है। और महेश या शिव के भी लोक है। वह कैलास है। कैलास में शिव अपनी देवी पार्वती के साथ [6]विराजमान हैं—ऐसा पुराणों में लिखा है। यह कैलास हिमालय पर है। किन्नर

---

[1] खालिस = शुद्ध
[2] बर्तन = पात्र
[3] धूप = सूर्यातप
[4] चाँदनी = चन्द्रप्रकाश
[5] असीम = सीमा रहित
[6] विराजमान = शोभित

चारण, यक्ष, गंधर्व अप्सरा आदि देवगण भी यहीं के रहनेवाले हैं। विख्यात मानसरोवर भी हिमालय में है। पुण्य नदी गंगा का जन्मस्थान भी हिमालय है। इस प्रकार हिमालय के नाम के पीछे एक प्रकार की पौराणिक पवित्रता छिपी है। यह पवित्रता तो हज़ारों बरसों की है। श्रीं शिव का आस्थान! इससे बढकर हिमालय को कौन सी [1]महानता चाहिए! मुनियों का लक्ष्यस्थान! शिवभक्तों का मुक्तिकेन्द्र! सौन्दर्योपासक कवियों का तीर्थस्थान!! इन कारणों से जब हम हिमालय कहते हैं तब उसका अर्थ 'हिमालय' (हिम का आलय) शब्द में [2]सीमित नहीं रहता। उसके पीछे एक अभौम तथा दैवी भावना है।

भारत आर्ष भूमि है। आर्ष भूमि का अर्थ है ऋषियों से संबंधित भूमि। पुराने [3]ज़माने में यहाँ के लोग चार आश्रमों में जीवन बिताते थे। [4]याने पूरे जीवन को चार भागों में बाँट देते थे। पहले ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन करते थे। फिर गार्हस्थ, उसके बाद वानप्रस्थ और अन्त में सन्यास आश्रम स्वीकार करते थे।

---

[1] महानता = माहात्म्य

[2] सीमित रहना = सीमा में बन्ध रहना

[3]. ज़माना = समय

[4]. याने =अर्थात्

ब्रह्मचर्य आश्रम में [1] शिक्षा प्राप्त करना मुख्य था। इसके लिए वे गुरुकुलों में जाकर दस-पन्द्रह बरस तक रहते थे। गार्हस्थ में शादी करके [2] बाल-बच्चों के साथ गृह-जीवन बिताते थे। फिर वे वानप्रस्थ आश्रम स्वीकार करते थे। वे वनों में जाकर [3] यम-नियमादि का पालन करते थे। अन्त में संन्यासाश्रम स्वीकार कर सन्यासी बन जाते थे। इस समय वे तप कर आत्मा को परमात्मा में [4] विलीन करने की कोशिश करते थे। अपनी इन्द्रियों का निग्रह कर आत्मा में विलीन होकर ये लोग तप करते थे। इस के लिए एकांतता की आवश्यकता थी। हिमालय से बढकर और एक उत्तम स्थान भारतीय मुनियों को नहीं था। वहाँ पहुँचना ही मोक्ष-प्रद था। इस प्रकार हिमालय इन ऋषियों का लक्ष्य स्थान बना था कितने ही लोग हिमालय की बरफ में विलीन हुए हैं। हिमालय पर विजय पाने के लिए जो लोग गये, उन में कुछ लोगों को हिम में [5] निमग्न मुनियों को देखने का अवसर भी हुआ था। आपने शायद

---

[1] शिक्षा = विद्या

[2] बाल-बच्चे = कुटुंब

[3] यम-नियम = मानसिक तथा शारीरिक नियन्त्रण

[4] विलीन करना = मिला देना, एक करना

[5] निमग्न = विलीन

[1] अखबारों में पढा होगा कि "रूपकुंड" नामक स्थान में कई लोगों के शव दिखाई पडे थे। उन लोगों की मृत्यु का कारण अब तक अनिश्चित है। प्रेत कथा की तरह अब तक वह रहस्यमयी है। इस प्रकार की कितनी ही रहस्यमयी कहानियाँ उस बरफ में विलीन हैं।

आप जानते हैं कि आज भी लोग शिव की प्रीति के लिए शिवरात्रि व्रत आदि व्रतों का पालन करते हैं। इन लोगों का [2] ध्येय कैलास-प्राप्ति है। वे विश्वास करते हैं कि शिव के [3] सच्चे भक्त बनकर उनकी प्रीति के लिए व्रतानुष्ठान आदि करने से मुक्ति मिलती है। वह कैलास-प्राप्ति है। यह सुनकर आपको आश्चर्य होगा कि यह चिरप्रतीक्षित मुक्ति केन्द्र कैसाल भी हिमालय में है। हज़ारों बरसों से लोगों का स्वर्ग बनकर हिमालय विराजमान है। इससे हिमालय की महत्ता समझ सकते हैं। हमारे [4] पूर्वजों ने हिमालय को कितनी महानता दी थी।

हिमालय के आधार पर [5] रची कई कविताएँ संस्कृत में तथा अन्य भाषाओं में हैं। कालीदास जैसे बडे बडे महाकवियों के

---

[1] अखबार = पत्र
[2] ध्येय = लक्ष्य
[3] सच्चा = यथार्थ
[4] पूर्वज = पूर्व पुरुष
[5] रची = बनायी

काव्यों में हिमालय की वर्णना अत्यन्त सुन्दर रूप में देख सकते हैं। इसके भी कारण हैं। एक तो हिमालय की दैवी-महानता। देवताओं के विहारक्षेत्र भक्तों के लिए स्वर्ग ही है। उस समय के कवि भक्त भी थे। और एक कारण हिमालय की [1]अक्षय सुन्दरता है। आदि से अब तक उसकी सुन्दरता में परिवर्तन नहीं हुआ है। हिमालय को प्रकृति सौन्दर्य का साकार रूप कह सकते हैं। आप जानते हैं कि कवि और प्रकृति में [2]अटूट संबन्ध है। इसलिए वे हिमालय को कैसे छोड सकते हैं। प्रकृति से ही कविता की प्रेरणा मिलती है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर भी हिमालय की सुन्दरता पर आकृष्ट हुए थे। [3]बचपन में वे अपने पिता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के साथ हिमालय गये थे। कवि [4]ही नहीं चित्रकार भी हिमालय की सुन्दरता का अनुभव करते हैं। रोरिच [5]रूस के प्रसिद्ध चित्रकार थे। वे कई दिन हिमालय में रहे। उन्होंने हिमालय के कई चित्र खींचे। उनमें कुछ चित्र तिरुवनन्तपुरम के [6]अजायब घर से संबधित एक अलग चित्रशाला में (श्रीचित्रालय में

---

[1] अक्षय = अनश्वर

[2] अटूट = पूर्ण

[3] बचपन = शैशव

[4] ही नहीं = केवल नहीं

[5] रूस = "रष्या"

[6] अजायब घर = म्यूज़ियम

नहीं) रखे गये हैं। इस प्रकार कवि, चित्रकार और अन्य कलाकार हिमालय से प्रेरणा पाते हैं। वे सब हिमालय की सुन्दरता के उपासक हैं।

भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू भी इन कलाकारों से पीछे नहीं थे। वे भी पहले हिमालय की सुन्दरता के पीछे [1]पागल हुए थे। वे बहुत दिन हिमालय में [2]घूमते रहे। सन् १९१६ में उनकी [3]शादी हुई। शादी के बाद वे काश्मीर में रहने लगे। वहाँ से वे एक दिन हिमालय की ओर गये। कई दिनों तक [4]पर्वत राट की सुन्दरता का आस्वादन करते रहे। इस यात्रा में वे [5]अचानक एक [6]दरार में जा गिरे। लेकिन भाग्यवश वे उससे बच गये। यात्रा का उद्देश्य अमरनाथ की [7]गुफ़ा देखना था। लेकिन वे वहाँ तक पहुँच न सके। आखिर वे लौट आये। इस अविस्मरणीय यात्रा के बारे में उन्होंने स्वयं लिखा है। इससे एक बात व्यक्त होती है। उस सुन्दरता के आगे सब लोग अपने को भूल जाते हैं।

---

[1] पागल = जिसकी स्थिर बुद्धि नहीं

[2] घूमना = फिरना [3] शादी = विवाह

[4] पर्वत राट = पहाड का राजा [5] अचानक = अकस्मात्

[6] दरार = फटने पर होनेवाली खाली जगह

[7] गुफा = गुहा

प्रश्न

१. हिमालय की प्राकृतिक-सुन्दरताओं का वर्णन कीजिए।
२. हिमालय की दैवी-महानताएँ क्या क्या हैं?
३. चार आश्रमों के बारे में आप को क्या मालूम है?
४. रोरिच के बारे में आप क्या जानते हैं?
५. जवाहरलालजी को हिमालय पर क्या हुआ था?

दो

कैलास २२०२८ फुट की ऊँचाई पर स्थित है। वहाँ तक जाना आनन्द दायक है। नदियों के श्वेत वर्ण वाले [1]रेतीले किनारों से होकर जा सकते हैं। नदी का "कल कल" नाद सुनकर हम उसमें विलीन हो जाते हैं। रास्ते में [2]दोनों तरफ 'चीड' के वृक्ष हैं। इसकी छाया अत्यन्त सुख पूर्ण तथा शीतल है। [3]हवा में

---

[1] रेतीला किनारा = सिकता तट

[2] दोनों तरफ = दोनों पार्श्व

[3] हवा = पवन

[1]पत्ते नाच नाचकर गीत गाने लगेंगे। रास्ते में अनेकानेक [2]उतार-चढाव होते हैं। कहीं आकर साधारण रीति से बढकर अधिक [3]साँस लेनी पडती हैं। [4]अक्सर कुछ दूर चलने पर हमें [5]प्यास लगती है न? घर में हम लोगों को पीने के लिए साधारण पानी मिलता है। लेकिन कैलास की यात्रा करनेवालों को अधिक रुचिपूर्ण पानी मिलता है। बरफ़ [6]गलकर पानी बन जाता है। इस जल का स्वाद अवर्णनीय है। कैलास की यात्रा करनेवाले यही जल पीते हैं।

कुछ और चढने पर सुन्दर सरयूनदी दिखाई पडेगी। वह "कल कल" नाद के साथ बहती है। कुछ दूर बहकर सरयू नदी भागीरथी नदी से मिलती हैं। फिर दोनों गोमती में जा मिलती हैं। इन नदियों का संगम स्थान देखने [7]लायक है। संगम पर देखने लायक [8]और एक वस्तु भी है। वह एक पुराना मन्दिर

---

[1] पत्ते = पर्ण

[2] उतार-चढाव = निम्नोन्नत स्थान

[3] साँस = श्वास

[4] अक्सर = साधारणतया

[5] प्यास = तृष्णा

[6] गलना = आर्द्र होना

[7] लायक = उचित

[8] और एक = दूसरा एक

है। इस मन्दिर में श्री बोधनाथ की मूर्ति है। मकर संक्रान्ति के दिन में यहाँ बडा उत्सव होता है। कई लोग उस अवसर बोधनाथ के दर्शन के लिए पहुँचते हैं। भक्त जन सरयू नदी में स्नान कर बोधनाथ की पूजा करते हैं। सरयू नदी में स्नान करना आनन्द पूर्ण है।

सरयू नदी के किनारे से होकर फिर आगे बढना है। उसके तट हरी घास से [1]आछादित है। वहाँ गाय-बकरियाँ चरती हैं। उसको चरानेवाले पास ही खडे खडे [2]बाँसुरी या अन्य कोई [3]बाजा बजाते हैं। सरयू नदी के किनारों की शोभा देखकर हम चलें। हम अब दो तीन मील आगे आये हैं। अब हम जोहार की [4]राह में आ चुके। यहाँ दो पथ दिखाई पडते हैं। एक दायीं ओर जाता है और दूसरा बाईं ओर जाता है। बाईं ओर से जानेवाले रास्ते से चलने से हम पिंडारा [5]हिमानी में पहुँचेंगे। यह हिमानी मशहूर है। दायें रास्ते से जाने पर हम अपने लक्ष्य स्थान कैलास तक का रास्ता

---

[1] आछादित = ढँका हुआ

[2] बाँसुरी = मुरली

[3] बाजा = संगीतयन्त्र

[4] राह = पथ

[5] हिमानी = हिमशिला

विजन है। हम सिर्फ "विजनता" शब्द ही जानते हैं। लेकिन विजनता शब्द का ठीक अर्थ हमको यहीं व्यक्त हो जाएगा। बीच बीच में कुछ घर दिखाई पड़ेंगे। यहाँ के रहनेवाले कुछ [1]खेती बारी करते हैं। कुछ और दूर चलने पर ऐसे घर भी देखने को नहीं मिलते। रास्ते में सहयात्री भी [2]नज़र आते नहीं। लेकिन डरने की बात नहीं। उस प्रकृति सुन्दरता में भीति के लिए स्थान नहीं है। हम उस शोभा में सब कुछ भूल जाते हैं। अपने को भी भूल जाते हैं। चलते चलते दूरी पर कैलास की रजताभ चोटी दिखाई पडेगी। अहा! आखिर हम कैलास पर पहुँचे। यह हमारे पूर्व पुरुषों की पुण्य भूमि है। यही उनका स्वर्ग था।

इसी स्वर्ग के निकट स्वर्ग की [3]वापिका के समान मानसरोवर विराजमान है। कैलास की चोटी और गुर्लामन्धाता की चोटी के बीच में मानसरोवर स्थित है। यह १२००० फ़ुट की ऊँचाई पर है। चारों ओर धवल हिम से आछादित पर्वत पंक्तियाँ। उनके मध्य में नीले रंग का अंडाकार मानसरोवर। निर्मल, धवल पृष्टभूमि में एक नील मणि! कितना सुन्दर है! शाम सबेरे इसकी शोभा [4]अवाच्य

---

[1] खेती बारी = कृषि

[2] नज़र आना = दिखाई पडना

[3] वापिका = तटाग, सर, तालाब

[4] अवाच्य = जिसका वर्णन असाध्य है

है । सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय सुवर्ण किरणें हिम पर पडती हैं। कैलास और गुर्लामन्धाता की चोटियाँ सुवर्ण शोभा में निमग्न हो जाती हैं। आकाश विविध वर्णों से आभूषित हो जाता है। ये सुन्दर वर्ण मानसरोवर में प्रतिबिंबित हो जाते हैं। प्रकृति-सुन्दरी का दर्पण। उसमें प्रतिबिंबित प्रकृति शोभा कितनी सुन्दर होगी। ऐसी मानसरोवर की शोभा मन-सरोज में देखते हैं न ?

शीतल हवा बहने लगती है। उसके झोंकों से मानसरोवर का हृदय पुलकित हो उठता है। उसमें छोटी छोटी [1]वर्तुल लहरें उठती हैं। वे नाच नाच कर आती हैं और किनारे को [2]चूम चूम कर चली जाती हैं। इस प्रकार हर समय इसकी चारों तरफ़ तरंगें उठती रहती हैं। लेकिन मानसरोवर का मध्य भाग प्रशांत है।

इस तालाब के नाम पर कई कहानियाँ प्रचलित हैं। लोगों का विश्वास है कि इस तालाब की दैवी शक्ति है। [3]खासकर यह अप्सराओं का क्रीडा-केंद्र है। वे रोज़ रात को यहाँ नहाने आती हैं और [4]मन बहलाती हैं, सबेरे सबेरे चली जाती हैं। इसलिए इसपर

---

[1] वर्तुल लहरें = वृत्तकार तरंगें

[2] चूमना = चुंबन करना

[3] खासकर = विशेष रूप से

[4] मन बहलाना = मन को सन्तुष्ट करना

मनुष्य विहार नहीं कर सकते। यदि कोई मनुष्य इस अलिखित नियम को तोडेगा तो वे अमानवी शक्तियाँ उसका नाश करेंगी उदाहरण के रूप में भी लोगों के पास कई कहानियाँ हैं। लेकिन आज मनुष्य किसकी [1]परवाह करता ? वह सोचता है कि उससे बढकर और कोई शक्ति है नहीं। इसलिए वह अपनी इच्छा के अनुसार करने लगा। वह मानसरोवर में विहार करने लगा। कई लोगों ने अपनी जान की भी परवाह न करके मानसरोवर में नौका यात्रा की। लेकिन उनका कुछ हुआ नहीं। वे उस अभौम सुख का अनुभव कर लौट आये। अभौम शक्ति पर विश्वास करनेवाले देखते रहे।

मानसरोवर की यात्रा करने से स्वर्गीय सुख मिलता है। लेकिन एक बात है। उसकी यात्रा [2]खतरनाक है। अचानक उसमें [3]तूफान उठती है। तूफान उठने का अवसर अज्ञात है। उस समय प्रशान्त मानसरोवर विक्षुब्ध बन जाता है मानो प्रशान्त पावन मन में विकारों की कालिमा विक्षुब्धता उत्पन्न करती हो। चारों ओर कालिमा [4]छा जाती है। सब कहीं घोर गर्जन सुनाई पडते हैं।

---

[1] परवाह = चिंता, आशंका

[2] खतरनाक = आपत्कर

[3] तूफान = चंडानिल

[4] छा जाना = व्याप्त होना

[1]मन को मोहनेवाली छोटी ऊर्मियाँ भीकर तरंगों का रूप धारण करती हैं। वे गरज गरजकर उठती हैं। तूफान उनको अधिक शक्ति प्रदान करती है। नीचे कुछ नहीं दिखाई पडता। ऊपर आकाश अंधकार में विलीन है। चारों ओर की धवल हिम-शैल-मालाएँ अदृश्य हो जाती हैं जैसे विकाराधीन मन परिस्थितियों के प्रति अंध बन जाता है। सब कहीं घना अंधकार ही अंधकार। उस भीकरता को बढानेवाले घोर गर्जन ही सुनाई देते हैं। शायद यही मानसरोवर की अभौम शक्ति होगी। यही शक्ति मानवों का नाश करती होगी।

प्रशांतता में उसकी सुन्दरता अभौम है। रात में उसकी शोभा अवर्णनीय हैं। चारों ओर की रजत-शैल-मालाएँ। उन पर दुग्ध-धारा सी चाँदनी छायी हुई है। नीलाकाश, [2]झिलमिलानेवाले अगण्य तारागण। ये सब मानसरोवर में प्रतिबिंबित होती हैं। ऐसी एक रात की कल्पना कीजिए। क्या, आपको भी ऐसी एक चाँदनी रात में मानसरोवर में नौका विहार करने की इच्छा नहीं होती? ज़रूर होगी! आपकी आशा पूरी हो!

इस सरोवर की लंबाई करीब पन्द्रह मील से अधिक है। कहीं कहीं दो सौ फुट से भी अधिक [3]गहराई है। इसलिए ही यह नीला

---

[1] मन मोहना = मन को आकृष्ट करना

[2] झिलमिलाना = प्रभापूर्ण होना [3] गहराई = गहनता

दिखाई पडता है। देश विदेशों से कई लोग यहाँ आते हैं— सिर्फ मानसरोवर को देखने के लिए। स्वेन हेडिन नामक एक यात्री मानसरोवर की यात्रा करने आये थे। उन्होंने फिर इस पर किताब लिखी। वे एक जगह कहते हैं—

"शायद दुनिया में मानसरोर से भी सुन्दर तडाग होंगे। लेकिन मानसरोवर के समान और कोई सरोवर कहीं नहीं है। क्यों कि इसमें प्रकृति की सुन्दरता और आध्यात्मिक महानता है। यह मनुष्यों की भक्ति तथा ध्यान को एक समान अपनी ओर आकृष्ट करता है।"

हिमालय का एक अत्यद्भुत स्थान है अमरनाथ। यह हिंन्दुओं के महान तीर्थ स्थानों में एक है। अमरनाथ काश्मीर की लीदर [1]घाटी में है। यह स्थान समुद्र तल से लगभग १८००० फुट की ऊँचाई पर है। अमरनाथ एक साधारण गुफ़ा है। लेकिन उसके अन्दर जो वस्तु है वह असाधारण है। वह हिम का बना शिवलिंग है। यह शिवलिंग स्वयं बनता है, बढता है और [2]मिटता है। [3]शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन से यह बनने लगता है। चन्द्रमा के

---

[1] घाटी = तराई

[2] मिटना = नष्ट होना

[3] शुक्लपक्ष = पौर्णमी का पक्ष

बढने के अनुसार यह लिंग भी बढता है। आखिर पौर्णमी के दिन जब चन्द्रमा संपूर्ण बन जाता है, यह शिवलिंग भी बढकर संपूर्ण बन जाता है। [1]पूनम के बाद चन्द्रमा क्षीणित हो जाता है। उसी क्रम से यह हिम-लिंग भी घटता है। और आखिर [2]नहीं का रह जाता है। इस प्रकार चन्द्रमा के बढने और घटने के अनुसार अमरनाथ का हिम-लिंग भी बढता-घटता रहता है। यही अमरनाथ की बडी विशेषता है। प्रकृति कितनी रहस्यमयी है!

यहाँ हर शिवरात्री को उत्सव होता है। शिवरात्री के दिन रामेश्वरम से काशी तक के भक्तगण यहाँ जमा होते हैं। अन्तरीक्ष "जय अमरनाथ" शब्दों से गूँज उठता है। हिमालय पुलकित हो उठता है। यहाँ तक की यात्रा अत्यंत विकट है। खतरनाक उतार चढाव, अप्रतीक्षित रूप में गिर पडनेवाले हिम-शैल, जंगली जानवर आदियों का हमेशा डर रहता है। फिर भी हज़ारों भक्त हर साल अमरनाथ की यात्रा करते हैं। शरद् ऋतु के अंत में या वसन्त के आरंभ में अमरनाथ की तीर्थ यात्रा [3]शुरू होती है। यात्रा करने वालों को कई स्थानों पर ठहरना पडता है। यात्री एक साथ

---

[1] पूनम = पौर्णमी, पूर्ण चन्द्र

[2] नहीं का रह जाना = नष्ट होना

[3] शुरू होना = आरंभ होना

रात बिताते हैं और सबेरे फिर साथ ही आगे बढते हैं। रास्ते में देखने लायक और एक स्थान है। वह "शेषनाग" नामक [1]झील है। यात्री यहाँ रात्रि बिताते हैं। यह हिमालय के उत्तुंग शिखरों के बीच में है। इसका जल शुद्ध तथा मीठा है। सबेरे यहीं स्नानकर तीर्थ-यात्री पूजा-पाठ आदि में निरत होते हैं। फिर अमर नाथ को लक्ष्य कर चलते हैं। अमरनाथ की गुफ़ा एक ऊँचे स्थान पर है। वहाँ तक चढकर पहुँचना बहुत कष्ट की बात है। फिर भी लोग वहाँ तक पहुँच ही जाते हैं। अपनी शक्ति से वहाँ पहुँचते नहीं। लक्ष्य प्राप्ति की इच्छा और विश्वास ही उन्हें वहाँ तक पहुँचा देते हैं। महाशिवरात्री के दिन सब लोग [2]जाग्रत होकर पूजा पाठ और नाम-जप करते हैं। अगले दिन सबेरे ही लौटते हैं। इतनी कष्टताएँ सहकर तीर्थयात्री यहाँ तक क्यों आते हैं? एक हिम लिंग के दर्शन मात्र के लिए। तो उसकी क्या महानता!

प्रश्न

१. श्री बोधनाथ मन्दिर कहाँ है और वहाँ कब उत्सव होता है?

२. मानसरोवर कहाँ है और उसकी क्या विशेषता है?

---

[1] झील = तालाब, तटाग

[2] जाग्रत रहना = जागरूक रहना

३. मानसरोवर की यात्रा क्यों खतरनाक है ?

४. स्वेन हेडिन ने मानसरोवर के बारे में क्या लिखा है ?

५. अमरनाथ गुफा की विशेषता और वहाँ की रहस्यमयता कौन सी है ?

तीन

आपको हिमालय तथा उसकी विशेषताओं के बारे में कुछ न कुछ मालूम हुआ होगा। अब हम उसकी भौगोलिक विशेषताओं पर नज़र डालेंगे।

दुनिया की सबसे ऊँची चोटी हिमालय पर है। इसलिए संसार में हिमालय का प्रथम स्थान है। भारत के उत्तर-पश्चिम की सीमा पर कारक्कोरम पर्वत मालाएँ हैं। इस पर्वत माला से लेकर असाम की पूर्वी सीमा लुशाय तक हिमालय पहाड व्याप्त है। इसकी लंबाई करीब दो हज़ार मील हैं। कहीं कहीं इसकी चौडाई दो सौ मील से अधिक है। लंबाई में इसके समान दुनिया में एक ही एक पर्वत है। वह अमेरिका का "आंडीस" पर्वत है। लेकिन

आंडीस पर्वत भी हिमालय के आगे छोटा है। क्योंकि उसकी सब से ऊँची चोटी की ऊँचाई २३१०० फुट हैं। उस समय एवरेस्ट की ऊँचाई २९१४९ फुट हैं। मीलों में कहें तो लगभग साढे पाँच मील इसलिए ही ऐवरेस्ट को "दुनिया का [1]छत" कहते हैं।

भारत की उन्नति में हिमालय का बडा [2]हाथ है। वह इस राष्ट्र का रक्षक है। युगों युगों से यह अपना वक्ष चौडाकर, सिर ऊँचा किये हमारे राष्ट्र की रक्षा करता रहता है। एक कविता सुनना चाहते हैं क्या? अच्छा, सुनिए। यह एक उर्दू [3]शायर की [4]शायरी है। वे शायर हैं मुहम्मद इक़बाल।

"परबत वो सबसे ऊँचा
हमसाया आसमाँ का।
वह संतरी हमारा
वह पासबाँ हमारा॥"

अर्थ सुनिए। हमारे हिन्दुस्तान का "वह पर्वत सबसे ऊँच है। वह आकाश का पडोसी है। वह हमारा पहरेदार है, हमारा

---

[1] छत = Roof
[2] हाथ रहना = प्रधानता रहना
[3] शायर = कवि
[4] शायरी = कविता

रक्षक है।" क्या, यह सच है न? हम ज़रा देखें कि हिमालय से हम को क्या क्या लाभ होते हैं।

पुराने ज़माने से हिमालय विदेशियों से हमारे राज्य की रक्षा करता रहा। आप जानते हैं कि भारत के पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी भाग समुद्र से [1]घिरे हुए हैं। दूसरे लोगों को भारत में प्रवेश करने का और एक मार्ग उत्तर दिशा ही है। लेकिन वहाँ हिमालय एक दुर्गम गढ के समान खडा है। फिर भी खैबर आदि [2]पहाडी रास्तों से शत्रु यहाँ प्रविष्ट हुए। हिमालय के कारण भारत में वर्षा होती है। [3]जलधरों को वह रोक रखता है और भारत में ही बरसने देता है। उत्तर से जो [4]लू बहती है उसको भी यह रोकता है। इसलिए भारतवासी लू से सुरक्षित हैं। हिमालय की और एक विशेषता है। वह नदियाँ हैं। सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्रा आदि नदियाँ हिमालय से जन्म लेती हैं। इन नदियो में कभी जल की कमी नहीं होती है। साल भर ये नदियाँ [5]भरी-पूरी बनकर बहती हैं। कडी गर्मी में भी ये नदियाँ जलपूर्ण हैं तो बडी वर्षा के समय

---

[1] घिरा = आवृत

[2] पहाडी रास्ता = पर्वत मार्ग

[3] जलधर = मेघ, जलद

[4] लू = गरम शुष्क हवा

[5] भरी पूरी = संपूर्ण

कैसी रहेगी ? इसका कारण है कि ये नदियाँ हिमालय से निकलती हैं। वर्षा ऋतु में सभी नदियाँ भर जाती हैं। गर्मी में हिमालय से बरफ [1]पिघलकर निर्मल पानी नदियों में बह जाता है। इसलिए गर्मी में भी पानी कम नहीं होता। सोचिए, किसानों को इससे बढकर क्या चाहिए ? कृषि प्रधान भारत के लिए यह एक वरदान है। ये नदियाँ जिन स्थानों से होकर बहती हैं वे स्थान उपजाऊ होते हैं। हिमालय हमारे अन्नदाता भी हैं।

पहले लोग समुद्र की गहराई, पर्वत की ऊँचाई आदि पर उतना ध्यान नहीं देते थे। लेकिन [2]संस्कृति के बढते बढते वे इस ओर भी ध्यान देने लगे। समुद्रों की गहराई [3]मापना, पर्वतों की ऊँचाई की गणना करना आदि कार्य शुरू होने लगे। उसके फलस्वरूप सन् १८४९ में भारत में भारतीय भू-मापन विभाग (Indian Survey Department) की स्थापना हुई। इस विभाग के उन्नताधिकारी कर्नल एवरेस्ट नामक एक अंगरेज़ था। राधानाथ सिखदार नामक एक भारतीय अफसर भी इस विभाग में काम करता था। माप कर ऊँचाई की गणना करने

---

[1] पिघलना = गलना, आर्द्र होना

[2] संस्कृति = संसार

[3] मापना = नापना (To measure)

का भार राधानाथ पर सौंपा था। वे तीन साल तक कठिन परिश्रम करते रहे। आखिर एक दिन राधानाथ को हिमालय की सबसे ऊँची चोटी का पता लगा। उस समय की गणना के अनुसार उसकी ऊँचाई २९००२ फुट की थी। वे अन्य ऊँची चोटियों से उसकी तुलना करने लगे। उनको व्यक्त हुआ कि यही संसार की सबसे ऊँची चोटी है। यह चोटी गौरीशंकर थी। राधानाथ ने [1]तुरन्त यह खबर सर्वे विभाग के प्रधान अफ़सर कर्नल एवरेस्ट को दी। कुछ ही समय में दुनिया भर यह खबर फैली कि दुनिया की सबसे ऊँची चोटी दिखाई पडी है। कर्नल एवरेस्ट की [2]यादगारी में गौरीशंकर चोटी का नाम मौण्ड एवरेस्ट रखा गया। भारत-पुत्र ने परिश्रम किया, गोरे ने यश पाया!

अब यह व्यक्त हो गया कि एवरेस्ट दुनिया की सबसे ऊँची चोटी है। स्वाभाविक रूप में ही लोगों को इसके ऊपर चढने की इच्छा हुई। उसके [3]माथे पर विजय की पताका फ़हराने के लिए लोग कोशिश करने लगे। क्योंकि मनुन्य को हमेशा विजयी बनने की [4]लालसा होती है। वह अपने प्राणों की भी परवाह न करके

---

[1] तुरन्त = जल्दी

[2] यादगारी = स्मारक

[3] माथा = ललाट, मस्तक

[4] लालसा = आग्रह

ऊँची ऊँची चोटियों पर चढता है। [1]अथाह समुद्रों में डूबकियाँ मारता है। अगम्य ध्रुवप्रदेशों को कब्जे में करने की कोशिश करता है। कितनी ही जान इन उद्यमों में नष्ट हुई। लेकिन किसी को इसकी परवाह नहीं। यही मानव प्रकृति है। मनुष्य सब प्राकृतिक शक्तियों को अपने अधीन बनाना चाहता है। एक एक होकर प्रकृति की शक्तियाँ मनुष्य के अधीन आने लगती है। आखिर एवरेस्ट भी मनुष्य-शक्ति के अधीन हो गयी। लेकिन इस विजय के पहले कितनी पराजय हुईं। कितनी आशायें बरफ़ में विलीन हुईं।

एवरेस्ट पर चढने की सबसे कठिन [2]समस्या वहाँ तक का रास्ता था। लेकिन अब वह [3]समस्या भी हल हुई। आखिर मनुष्य शक्ति के आगे प्रकृतिशक्ति कीं हार हुई—ऐसा कहा जाता है।

प्रश्न

१. हिमालय की भौगोलिक स्थिति के बारे में आप क्या जानते हैं?

२. हिमालय के कारण भारत को क्या क्या लाभ होते हैं?

---

[1] अथाह = गहन

[2] समस्या = प्रश्न

[3] समस्या हल होना = प्रश्न का निर्धारण करना

३. किसे कब और कैसे मालूम हुआ कि संसार की सर्वोत्तुंग चोटी हिमालय पर है ?

४. सर्वोत्तुंग चोटी "एवरेस्ट" क्यों कहलाया ?

चार

लेंडन में एक समिति है। उसका नाम है राजकीय भूगोल शास्त्र समिति (Royal Geographical Society) उस समिति ने एवरेस्ट की चढ़ाई करने के लिए एक विशेष समिति की [1] नियुक्ति की। वह समिति एवरेस्ट की चढाई के बारे में खोज शुरू करने लगी। इस प्रयत्न में "अल्पाइन क्लब" नामक एक समिति ने भी सहायता दी। दोनों समितियों के प्रयत्न से सन् १९२१ में एवरेस्ट की चढाई करने के लिए एक मंडली निकली। पर्वतारोहण में विशेष [2] जानकारी रखनेवाले कई पर्वतारोही इस मंडली में थे। एवरेस्ट पर चढने के लिए तिब्बत को पार करना था। तिब्बत के दलाई लामा से अनुमति पाकर ये हिमालय चढने लगे। यह मंडली १३००० फुट

---

[1] नियुक्ति करना = नियोजित करना, प्रेरणा देना

[2] जानकारी = ज्ञान

की ऊँचाई तक पहुँची। एवरेस्ट पर पहुँचने से बढ़कर [1]गवेषण करना ही उनका मुख्य उद्देश्य था। लेकिन उससे अधिक ऊँचाई तक वे चढ न सके। आखिर ये लौट आये। यह पराजय नहीं थी। यह मंडली दूसरों का मार्ग-दर्शक रही। सर्व प्रथम प्रयत्न के रूप में इस मंडली की याद हमेशा रहेगी।

साहसी लोग कहीं हार माननेवाले नहीं। सन् १९२२ में सी. जी. ब्रूस के नेतृत्व में और एक मंडली एवरेस्ट की चढाई के लिए निकली। इस मंडली में नेता को छोडकर और छः अंग भी थे। वे मलोरी, सोमरवेल, नोर्टन, मोरषेद, फिंज और जियोफ्री ब्रूस थे। ये पर्वतारोहण के [2]विशेषज्ञ थे। इनका ध्येय गवेषण करना नहीं था। उन्होंने एवरेस्ट पर पहुँचने का दृढ विश्वास किया था। ये अपने साथ प्राणवायु से भरे मुखावरण (mask) भी ले गये थे। कुछ लोगों की राय थी कि इस प्रकार के मुखावरण की सहायता लेना [3]कायरता है। लेकिन इस मंडली ने उसकी [4]अनसुनी की। यात्रा शुरू हुई। ये हिमालय पर [5]तम्बू डालने लगे। ये तम्बू

---

[1] गवेषण = अनुसन्धान

[2] विशेषज्ञ = Specialist

[3] कायरता = भीरुता

[4] अनसुनी करना = आनाकानी करना, ध्यान न देना

[5] तंबू = शिविर (camp)

विश्राम करने के लिए थे। १७७०० फुट की ऊँचाई पर पहला तम्बू बनाया गया। १९८०० फुट की ऊँचाई पर तीसरा और २३००० फुट की ऊँचाई पर चौथा तम्बू बनाया गया। इन चारों तम्बुओं को पारकर वे "उत्तरी कोल" पर पहुँचे। वहाँ से वे फिर आगे बढ़ने लगे। इस यात्रा के लिए चार व्यक्ति तैयार हुए। वे मलोरी, सोमरवेल, नोर्टन और मोरषेद थे। उन्होंने २४५०० फुट की ऊँचाई पर पाचवाँ तम्बू बनाया। फिर वे आगे बढने लगे। आखिर वे २७३०० फुट की ऊँचाई तक पहुँच सके। यह एक विजय थी। लेकिन वे इससे आगे बढ न सके। क्योंकि इसके अन्दर वर्षा शुरू हुई थी। हिमालय की वर्षा का [1]सामना करना असाध्य है। आखिर वे लौटे। इस यात्रा में स्मरणीय कार्य यह था कि इन्होंने प्राणवायु से भरे मुखावरण [2]इस्तेमाल नहीं किये थे।

सन् १९२४ में फिर ब्रूस के ही नेतृत्व में और एक मंडली इस महान कार्य के लिए तैयार हुई। यह यात्रा चिरस्मरणीय है। उसकी याद हृदय-विदारक है। क्योंकि दो प्रयत्नशील युवक हिमालय के हिम में विलीन हुए थे।

---

[1] सामना करना = प्रतिरोध करना

[2] इस्तेमाल करना = उपयोगी बनाना

यात्रा शुरू हुई। कुछ दिन बीत गये। संघ के नेता ब्रूस को झट लौटना पडा। क्योंकि उनकी तन्दुरुस्ती बिगड गयी थी। नोर्टन संघ का नेता बन गया। फिर वे आगे बढे। इस मंडली में नोर्टन, मलोरी, और सोमरवेल को छोडकर दो और व्यक्ति थे। वे सांडी ऐरविन और ओडल थे। वे २१००० फुट की ऊँचाई तक पहुँचे। कई [1]कठिनाइयों को झेलकर वे आगे बढे। सब लोग श्रान्त हुए थे। लेकिन तब भी दो व्यक्तियों में साहस शेष रहा। वे साहसी पुरुष मलोरी और ब्रूस थे। वे २५५०० फुट की ऊँचाई तक पहुँच सके। तूफ़ान के कारण वे एक रात के बाद लौट आये। फिर सोमरवेल और नोर्टन आगे बढे। वे २६५०० फुट तक पहुँचने में सफल हुए। उनके साथ प्राणवायु से भरे मुखावरण नहीं थे। इसलिए वे अधिक आगे न जा सके। सोमरवेल की मुँह से खून बहने लगा। नोर्टन अकेला फिर आगे बढा। वह अकेले २८१५० फुट तक चढ सका। लेकिन इतने में उसकी आँखों की वीक्षण शक्ति कम हुई। इसलिए नोर्टन भी लौट आया।

तीन दिनों तक सब लोग विश्राम करते रहे। तीसरे दिन और दो जवान आगे बढ आये। उन्होंने यह निश्चय किया था की

---

[1] कठिनाइयाँ झेलना = कष्टताओं का सहन करना

किसी न किसी प्रकार हम एवरेस्ट पर विजय पाएँगे। शायद हिमालय ने भी निश्चय किया होगा कि मैं भी मानवों पर विजय पाऊँ। जून महीने की आठवीं तारीख! उस दिन सूरज के उदय होते ही मलोरी और ऐरविन एवरेस्ट को लक्ष्य कर निकले। लेकिन वे कभी लौटे नहीं। उनके बारे में आज भी कई कहानियाँ प्रचलित हैं। जो भी हो, कोई भी यह नहीं जानता है कि उनको क्या हुआ। ओडल ने बडी दूरी पर इन साहसियों को देखा था। वे काले बिन्दुओं के समान दिखाई पडे थे। लेकिन कुछ देर बाद वे [1]कुहरे में विलीन हो गये। शायद वह काल की यवनिका थी। आज भी उनकी आत्माएँ उसी काल यवनिका के अन्दर हैं। उनकी आत्माओं को अमरता मिले!

ह्यूटरलांड के नेतृत्व में १९३३ में और एक प्रयत्न हुआ। लेकिन इसमें भी सफलता न मिली। गौरीशंकर की चोटी तब भी दूरी पर खडी रही। वह इन लोगों को देखकर हँस रही थी। ह्यूरलांड की मंडली में एरिक शिप्टन, स्मिथ आदि विख्यात पर्वतारोही थे। इन लोगों को एक दिन केलिए भी अनुकूल प्रकृति नहीं मिली। यही उनकी असफलता का कारण था। लेकिन इस यात्रा में

---

[1] कुहरा = हिम-यवनिका (Mist)

एक बात हुई। करीब २८२५० फुट की ऊँचाई पर इस मंडली को एक [1]हिम-कुलहाडी मिली थी। वह मलोरी की थी।

सन् १९३५ और १९३६ में दो और प्रयत्न हुए। लेकिन दोनों प्रयत्न असफल निकले। १९३५ की मंडली को रास्ते पर एक शव मिला। रोगंबक तल्हटी में वह पडा था। वह शव विलसन नामक एक आदर्शवान साहसी पर्वतारोही का था। विलसन का मत था कि शास्त्र की सहायता लेकर हिमालय को परास्त करने में पौरुष नहीं। मनुष्य को किसी भी [2]सज्जा के बिना ही पर्वत पर चढना चाहिए। इस महान तत्व को [3]काम में लाने के लिए विलसन स्वयं हिमालय में गया। उसके साथ न कोई साथी था और न कोई वैज्ञानिक सामग्री थी। वह धीर आदमी धीरता से मृत्यु के [4]पंजे में जा फँस गया।

१९३८ में टिलमान एक मंडली का नेतृत्व स्वीकार कर हिमालय गया। लेकिन वह भी निराश बनकर लौटा। १९३८ के बाद तेरह सालों तक हिमालय पर चढने का कोई प्रयत्न न हुआ।

---

[1] कुल्हाडी = फरसा (axe)

[2] सज्जा = तैयारी

[3] काम में लाना = इस्तेमाल करना

[4] पंजे में जा फँसना = अधीन बनना

क्यों कि दूसरा महायुद्ध चल रहा था। दुनिया युद्ध में निरत थी। अब हिमालय [1] नगण्य रहा।

प्रश्न

१. गौरीशंकर पर चढने की सर्व प्रथम यात्रा के बारे में क्या मालुम है ?

२. सन् १९२४ की यात्रा चिरस्मरणीय तथा हृदय-विदारंक क्यों है ?

३. सन् १९३५ की मंडली को रोगंबक तल्हटी से जो शव मिला था वह किसका था और आप उस व्यक्ति के बारे में क्या जानते हैं ?

४. १९३८ से १९५१ तक हिमालय की यात्रायाँ क्यों हुई नहीं ?

---

[1] नगण्य = जिसकी मान्यता नहीं

पाँच

युद्ध खतम हुआ। परिस्थितियाँ [1] पूर्ववत शांत हुईं। हिमालय की याद फिर आयी। सन् १९५१ में हिमालय यात्रा की अनुमति मिली। एरिक शिप्टन आरोहण संघ का नेता चुन लिया गया। इस संघ का उद्देश्य एवरस्ट पर विजय पाना नहीं था। एक नया रास्ता ढूँढ निकालना था। उसमें वे सफल हुए। 'दक्षिण कोल' पहुँचने का एक नया रास्ता इन्होंने ढूँढ निकाला। फिर वे लौटे।

तब तक की सभी यात्राओं की [2] देख-भाल ब्रिटिश सरकार कर रही थी। उस समय यह विचार प्रचलित था कि यदि एक राज्य पर्वतारोहण की कोशिश करता है तो सफलता तक उस कार्य में अन्य राज्यों को भाग लेना नहीं चाहिए। १९२१ से लेकर १९५१ तक ब्रिटिश सरकार इस कार्य में लगी रही। सफलता दूर ही रही। आखिर स्विट्सरलैंड सरकार ने भी एवरेस्ट पर चढने का निश्चय किया। एवरेस्ट तो दुनिया की सबसे ऊँची चोटी है। उस पर सब राष्ट्रों का समान अधिकार है। इसके आधार पर स्विट्सरलैंड सरकार को भी एवरेस्ट पर चढने की अनुमति मिली।

---

[1] पूर्ववत = पहले की तरह

[2] देख-भाल = संरक्षण

१९५१ में एक स्विस मंडली हिमालय की ओर निकली। इसका नेता वैसड्यूनांड था। इस संघ में एक नया अंग भी था। हिमालय पर जन्म लेकर हिमालय पर में ही रहनेवाला एक शेरपा था वह। उसका नाम था तेनसिंग। लांबर्ट और तेनसिंग इस यात्रा में २८२०० फुट तक पहुँच सके। लेकिन उनको [1]मज़बूरन लौटना पडा। यदि और कुछ कोशिश करते तो ज़रूर वे सफल होते। जो भी हो, यह यात्रा भी असफल बन गयी। उसी साल में दो तीन महीनों के बाद और एक स्विसमंडली को भी निराश होकर लौटना पडा। अब भी हिमालय का वह सर्वोत्तुंग शिखर [2]अजेय बनकर सिर ऊँचा किये खडा रहा।

१९५३ में राजकीय भूगोल शास्त्र समिति फिर हिमालय की ओर ध्यान देने लगी। उसने और एक संघ को हिमालय भेजने का निश्चय किया। इस समय संघ की तैयारी वैज्ञानिक रूप से संपूर्ण बनाने की कोशिश हुई। अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षणों के साथ सब सामग्रियाँ तैयार की गयीं। संघ का नेता भी निश्चित किया गया। वे थे केनल हण्ड। उनके अलावा संघ में बारह व्यक्ति थे। उनके नाम यहाँ दिये जाते हैं—थामस डि बोर्डिल्लन, आलफ्रड ब्रिगोरी, एडमंड पी. हिलेरी, जोर्ज लोव, चारल्स विली, जोर्ज सी.

---

[1] मज़बूरन = निर्बन्धित होकर

[2] अजेय = जिसको जीतना कठिन है

बांड, विलफ्रड़ नोयस, मइकेल वेस्ट माकट, डाक्टर चारल्स इवान्स, डाक्टर मइकेल वार्ड, डाक्टर ग्रिफ्रिथ पुग और शेरपा तेनसिंग।

शेरपा लोग साधारण रूप से पर्वतारोहियों के माल [1] ढोनेवाले हैं। लेकिन राजकीय भूगोल शास्त्र समिति की पर्वतारोही मंडली में एक शेरपा भी अंग बन गया। इसकी क्या विशेषता है? विशेषता अवश्य है। क्या आप जानना चाहते हैं न? अच्छा, तेनसिंग के बारे में कुछ सुनिए।

शेरपा लोग पंद्रह-सोलह हज़ार फुट की ऊँचाई पर रहनेवाले हैं। हिम से वे जन्म से ही परिचित हैं। उनकी बाल-लीलाएँ हिम पर ही होती हैं। हिम के बीच में वे पलते हैं। इस प्रकार हिम उनके लिए एक प्रश्न नहीं है। वे वहाँ खेती-बारी भी करते हैं। लेकिन सब लोग खेती-बारी कर नहीं सकते। यदि ऐसा हो तो भी उस के लिए अनुयोज्य स्थान वहाँ बहुत कम है। इसलिए अधिकाधिक लोग दार्जिलिंग, काठमण्डू आदि स्थानों में आकर रहते हैं। क्यों कि पर्वतारोही इधर से ही [2] गुज़रनेवाले हैं। उनकी [3] माल असबाबें उठाकर उनके साथ हिमालय पर चलने से धन

---

[1] ढोनेवाले = भार ले चलनेवाले

[2] गुजरना = to pass on

[3] माल असबाबें = साधन-सामान

मिलता है। इस धन [1]के सहारे वे दिन बिताते हैं। भारी बोझ लेकर ऊँचे ऊँचे पहाडों पर चढना इन शेरपाओं के लिए साधारण कार्य है। ठंड को सहने की असाधारण शक्ति शेरपाओं में है। बीस हज़ार फुट तक जाने पर मनुष्य की स्थिति झट से बदलती है। मुख्य कठिनाई साँस लेने में है। ऊँगलियाँ [2]ठिठुर जाती हैं। वीक्षण-शक्ति नष्ट होती है। श्रवण-शक्ति क्षीण हो जाती है। बोलना असाध्य हो जाता है। बातें याद नहीं रहतीं। [3]दिमाग खराब हो जाता है। कभी कभी नाक और मुँह से खून भी निकलने लगता है। लेकिन शेरपाओं को ऐसी विषमताएँ नहीं। वे तो उन्हीं परिस्थितियों में रहनेवाले हैं। वहाँ की [4]जलवायु उनके लिए चिरपरिचित है।

सन् १९१४ में एक शेरपा परिवार में तेनसिंग का जन्म हुआ। उसका जन्मस्थान नान्चेबा गाँव है। यह नेपाल-तिब्बत की उत्तरी पूर्वी सीमा पर तुंग-जुंग शोल्ू खंभा में है। उनका पिता एक साधारण [5]कुली था। बचपन से ही तेनसिंग हियालय का दिली

---

[1] के सहारे = की सहायता से

[2] ठिठुर जाना = शीत से निष्क्रिय बनना

[3] दिमाग खराब होना = बुद्धि अस्थिर बनना

[4] जलवायु = ऋतु की विशेषता (climate)

[5] कुली = सामान ले जानेवाला मजदूर

दोस्त बन गया। घंटों तक वह हिमालय के उन धवल सुन्दर और उन्नत शिखरों को देखता रहता था। उसका मन भावनाओं की पंख लगाकर उन धवल शृंगों के ऊपर विचरण करता था। बचपन में उसको पढने का अवसर न मिला। शेरपाओं को पढने-लिखने की सुविधा होती ही नहीं थी। पहले तेनसिंग भी अपने वंशजों के समान कुली का काम करता था। लेकिन उसका [1]ध्येय हिमालय की चोटियों पर विजय पाना था। आखिर वह अपनी प्रतीक्षाओं की सफलता के लिए घर से भागकर दार्जीलिंग गया। १९३५ में ऐरिक शिप्टन वहाँ गया। शेरपाओं को [2]चुनते चुनते इन्हें तेनसिंग मिल गया। १९४७ में एक पर्वतारोही संघ के मार्गदर्शी के रूप में तेनसिंग नियुक्त हुआ। इस प्रकार कई बार हिमालय की यात्रा करने का अवसर तेनसिंग को प्राप्त हुआ। दुनिया में तेनसिंग ही एक ऐसा व्यक्ति है जिसने लगातार नौ बार हिमालय की यात्रा की थी।

धीरे धीरे वह शेरपाओं में प्रधान बन गया। हर हिमालय पर्वतारोही मंडली को तेनसिंग की सहायता अवश्य रही। क्यों कि वह हिमालय के [3]प्रत्येक मार्ग से परिचित था। आखिर सन्

---

[1] ध्येय = लक्ष्य

[2] चुनना = इच्छानुसार ले लेना

[3] प्रत्येक = हर एक

१९५२ में शेरपा तेनसिंग एक मार्गदर्शी के स्थान से उठकर स्विज़ पर्वतारोही संघ का एक अंग बन गया। तेनसिंग के जीवन की अभिलाषा पूर्ण हो गयी। एक शेरपा के लिए इससे बढकर अच्छा एक स्थान मिलना कठिन है। तेनसिंग इसके लिए [1] लायक था ही।

तेनसिंग विवाहित है। उसकी पत्नि का नाम ओड लामु है। उसके दो बच्चे भी हैं—दो लडकियाँ—नीमा और पेमपेम। वह अपने [2] परिवार के साथ सुख जीवन बिता रहे हैं।

केनल हण्ड की मंडली में जब तेनसिंग अंग बन गया तब उस ने हिमालय पर विजय पाने का निश्चय किया। उस निश्चय के अनुसार आखिर उनको सफलता मिली। यात्रा की तैयारियाँ पूर्ण हुईं। नांची बाज़ार से यात्रा शुरू करनी थी। संघ के तेरह अंगों के सिवाय शेरपा जाती के सैकडों स्त्री-पुरुष भी थे। सब लोग अत्यन्त खुशी के साथ मिल-जुलकर काठमाण्डू से होकर नांची बाज़ार को निकले। वहाँ ठहरकर उन्होंने यात्रा की परिपाटियाँ तैयार कीं।

मार्च की २७ वीं तारीख को वे "त्यांग-बोच" नामक बुद्ध विहार में पहुँचे। केनल हण्ड ने इस रमणीय स्थान को यात्रा का

---

[1] लायक = योग्य

[2] परिवार = कुटुंब

केन्द्र बनाने का निश्चय किया। हण्ड की परिपाटी में एवरेस्ट तक आठ तंबू थे। पहला खंबू ग्लेशियर के निकट, दूसरा ग्लेशियर के मध्य में, तीसरा उसके अन्त में, चौथा पश्चिमी क्वं नामक तराई में, पाँचवाँ लोहट्स पर्वत माला के नीचे, छठा उसी पर्वत के [1]बगल में, सातवाँ दक्षिणी कोल में तथा अंतिम तंबू दक्षिण कोल और एवरेस्ट के बीच में। वे इस परिपाटी के अनुसार एक एक तंबू बनाते आगे बढे। आखिर २८५०० फुट की ऊँचाई तक वे पहुँच गये। वहाँ से एवरेस्ट पर चढने के लिए पहले बोर्डिल्लन और इवान्स नियुक्त हुए। लेकिन [2]परिस्थितियाँ उनके लिए अनुकूल नहीं थीं। वे निराश होकर लौटे।

दूसरी [3]बारी तेनसिंग और हिलेरी की थी। बोर्डिल्लन और इवान्स ने रास्ते की सारी बातें इन्हें समझा दीं। आखिर मई की २८वीं तारीख को तेनसिंग और हिलेरी यात्रा के लिए निकले। [4]जान को हथेली पर रखकर वे दोनों साहसी युवक आगे बढे। वे प्राणवायु से भरे मुखावरण धारण किये हुए थे। लेकिन उनकी [5]शंका थी कि कब तक प्राणवायु मिलती रहेगी।

---

[1] बगल में = पार्श्व में

[2] परिस्थितियाँ = चारों ओर की स्थितियाँ

[3] बारी = Turn

[4] जान हथेली पर रखना = ज़िन्दगी की परवाह न करना

[5] शंका = संशय

बडी कठिनाइयाँ झेलकर वे आगे बढे। लो; उनका लक्ष्य स्थान आँखों के सामने दिखाई पडा। उनकी खुशी की क्या सीमा! आखिर वे हिमालय के उत्तुंग शिखर गौरी शंकर पर पहुँच गये। दोनों कुछ देर तक [1] अवाक् रह गये। आनन्द की उमंगें [2] उमड रही थीं। मई की २९वीं तारीख। समय ठीक साढे ग्यारह। मन के विकार जब शांत हुए तब दोनों एक दूसरे के गले से मिले। उस आलिंगन में क्या क्या भावनाएँ सम्मिलित रही होंगी। तेनसिंग ने अपनी [3] जेब से चार पताकाएँ बाहर निकालीं। संयुक्तराष्ट्र, नेपाल, भारत और ब्रिटन की पताकाएँ। तेनसिंग ने दुनिया की छत पर वे पताकाएँ [4] फहराईं। हिलेरी ने उसकी फोटो खींची। उसने एवरेस्ट से और कई दृश्यों की फोटो भी खींच लीं। दुनिया की सब से ऊँची चोटी में स्थित होकर चारों ओर देखना! एक मनुष्य को, खासकर एक पर्वतारोही को उससे बढकर क्या सफलता चाहिए।

हिलेरी ने मन ही मन उस अभौम शक्ति को धन्यवाद अदा किया। तेनसिंग ने आँखें मूँदकर लोकमाता "चोमो लुङ मांवी" की प्रार्थना की।

आखिर मनुष्य-शक्ति की जीत हुई।

---

[1] अवाक् = मूक

[2] उमडना = उठकर चारों ओर फैलना

[3] जेब = Pocket

[4] फहराना = हवा में उडा देना

प्रश्न

१. व्हित्सरलैंड सरकार ने हिमालय-यात्रा का भार क्यों ले लिया और कैसे ?

२. १९५३ की यात्रा-मंडली की विशेषताएँ कौन सी थीं और उसके अंग कौन कौन थे ?

३. शेरपा लोगों के बारे में आप क्या जानते हैं ?

४. तेनसिंग की जीवनी संक्षेप में लिखिए ।

५. मनुष्य शक्ति की जीत कब और कैसे हुई ?

Printed at the Sridhara Printing House, Trivandrum.